❶ ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पाहि माम्।

यजुर्वेद 2/16

हे प्रभो! मेरी रक्षा करो।

O God ! Protect me from all sides and in every way.

वर्ष 42, अंक 9 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 14 जनवरी, 2019 से रविवार 20 जनवरी, 2019

विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
5 जनवरी से 13 जनवरी, 2019

वैदिक साहित्य प्रचार के रूप में नौ दिवसीय यज्ञ सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति 10/- रुपये में 500 पृष्ठों की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश रही विशेष आकर्षण

एक ही जिल्द में 30 किलोग्राम का तेलगू भाषा में प्रकाशित वेद रहा विशेष आकर्षण का केन्द्र

ईश्वरीय वाणी- वेद, सत्यार्थ प्रकाश, उपनिषद, दर्शन एवं वैदिक साहित्य को खरीदने-देखने में रही विभिन्न मत-सम्प्रदायों के अनुयायियों की रूची

35 पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं ने उत्साह से किया कार्य : समस्त कार्यकर्ताओं एवं दानदाताओं का हार्दिक धन्यवाद

नेशलन बुक ट्रस्ट, भारत सरकार की ओर से प्रगति मैदान में आयोजित विश्व पुस्तक मेला 15 जनवरी को अभूतपूर्व सफलता एवं अप्रतिम स्मृतियों के साथ समाप्त हो गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से इस वर्ष साहित्य प्रचार के लिए हिन्दी साहित्य के 10 एवं एक स्टाल अंग्रेजी/बाल साहित्य के आरक्षित कराया गया था। 5 से 13 जनवरी तक चलने वाले पुस्तक मेले इस बार भी समस्त वैदिक साहित्य समेत सत्यार्थ प्रकाश ने गत वर्षो की तरह धूम मचाई। देश-विदेश से आये हजारों की संख्या में प्रकाशन, धार्मिक संस्थाओं की उपस्थिति में आर्य समाज का स्टाल प्रमुख चर्चा का केंद्र बिंदु बना रहा। आर्यसमाज की एकता और संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए सभा ने अपना एक स्टाल परोपकारिणी सभा को प्रचारार्थ दिया था। उन्होंने भी पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश को मात्र 10/- रुपये में उपलब्ध कराकर सहयोग प्रदान किया। सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर श्री राजीव चौधरी जी की नई पुस्तक 'मजहब के अंधेरे कोने' का भी विमोचन किया गया।

- विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्र अगले अंक में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 20 जनवरी, 2019 सायं : 3 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक निर्वाचन 25 नवम्बर, 2018 के उपरान्त सभा की प्रथम अन्तरंग सभा बैठक रविवार 20 जनवरी, 2019 को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में सायं 3:00 बजे से आयोजित की गई है।

दिल्ली सभा के समस्त नव निर्वाचित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें। समस्त माननीय सदस्यों को स्पीड पोस्ट के माध्यम से विधिवत् सूचना प्रपत्र भेजे जा चुके हैं। *- विनय आर्य, महामन्त्री*

कुम्भ मेला : 15 जनवरी से 4 मार्च, 2019 प्रयागराज में

वेद प्रचार शिविर का आयोजन

सैक्टर 14 प्लाट नं. 75-77 तुलसी मार्ग (प.), सै. मैजिस्ट्रेट कार्यालय के बराबर, कुम्भ मेला क्षेत्र	सैक्टर 19 सच्चा आश्रम के सामने निकट सै. कार्यालय, कुम्भ मेला क्षेत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मार्ग निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग, आर्यवीर दल, स्थानीय आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के सहयोग से कुम्भ मेले में आर्यसमाज की उपस्थित दर्ज कराने एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मतव्यों, मान्यताओं, विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वेद प्रचार शिविर के रूप में दो स्थानों पर प्रचार स्टाल का आयोजन किया जा रहा है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा भी इस कार्य में पूर्णत: सहयोगी बनते हुए वैदिक साहित्य का प्रचार करने जा रही है। शिविर का उद्घाटन 21 जनवरी को होगा।

समस्त आर्यजनों, महर्षि दयानन्द के अनुयायियों, आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं, अधिकारियों एवं सदस्यों तथा समस्त पाठकवृन्दों से निवेदन है कि इस वर्ष के कुम्भ मेले में आर्यसमाज के प्रचार स्टाल पर अवश्य ही पहुंचकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें एवं कुम्भ में प्रचार के माध्यम से एक बार फिर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराने में सहयोगी बनें। मेले में किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए श्री अजेय कुमार मेहरोत्रा (9305990143), श्री राजेन्द्र कपूर जी (7007796112, 8687735001) अथवा श्री सतीश चड्डा जी (9540041414, 93 13013123) से सम्पर्क करें।

कुम्भ मेले में **नि:शुल्क वैदिक साहित्य वितरण** में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **कैम्प कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें। *- प्रकाश आर्य, सभा मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*

वेद-स्वाध्याय

सर्व औषधरूप प्राण

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत यते।। - ऋ० १०/१३७/३
ऋषिः गोतमः ।। देवता - विश्वेदेवा।। छन्दः अनुष्टुप् ।।

शब्दार्थ - **वात** = हे प्राण! **भेषजं आवाहि**= मुझमें औषध को बहा लाओ और **वात** = हे प्राण! **यत् रपः** =मुझमें जो दोष-मल हैं, उसे **वि वाहि** =मुझमे बाहर बहा ले-जाओ। **त्वम** =तुम **हि**= निश्चयरूप से **विश्व भेषजः** =सर्व औषधरूप हो, **देवानां दूत ईयते** =तुम देवताओं के दूत होकर चल रहे हो।

विनय - हे वायो! हे प्राण! तुम सर्व औषधरूप हो, तुममें सब-की-सब दवाइयां विद्यमान हैं। मैं तो यूँ ही इन बाहर की नाना प्रकार की दवा यों के खाने-पीने के चक्कर में पड़ा हुआ हूँ। यदि मैं, हे तात! तुम्हारा ठीक तरह सेवन करूँ, तुम्हारी शक्ति का उपयोग करूँ, तो मुझे कभी किसी दवा की आवश्यकता न हों संसार के 10 प्रतिशत रोगी इसीलिय रोगग्रस्त हैं चूँकि वे ठीक प्रकार श्वास लेना नहीं जानते तथा सर्वौषधमय तुम्हारा लाभ उठाना नहीं जानते। यदि हम ठीक प्रकार श्वास लेवें तो अन्दर आता हुआ श्वास ही हमारा दिव्य औषधपान हो और बाहर जाता हुआ प्रश्वास हमारे सब रोग-मल निकालने वाला होता रहे। यह जो कहा जाता है कि देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार हैं वे और को नहीं हैं, वे नासत्यौ (नाक से पैदा होनेवाले) अश्विनौ, ये श्वास-प्रश्वास या प्राणपान ही हैं, जिन्हें इडा-पिंगला, चन्द्रप्राण-सुर्यप्राण आदि अन्य रूपों में भी देखा जाता हैं। इस प्रणापान के नियमन द्वारा संसार के सब रोगों की दिव्य और अमोघ चिकित्सा हो जाती है। मैं यूँ ही बाहर के वैद्यों को खोजता-फिरता हूँ, जबकि असली दिव्य वैद्य मेरे अन्दर ही बैठे हुए हैं। सब औषध मेरे अन्दर मौजूद हैं, मैं इन्हें बाहर कहाँ ढूढता हूँ ?

और हे प्राणो! तुम तो देवदूत हो अन्दर देवदूत होकर चल रहे हो, हमारे अन्दर सब देवों के संदेशों को लाकर सुनाते हुए सदा चल रहे हो। हम प्रनोपासना से रहित, स्थुलरत लोग बेशक तुम्हारे इन सूक्ष्म देव-सन्देश को न सुनते हों अतएव तुम्हारी दिव्य चिकित्सा से वञ्चित रहते हों, परन्तु जो उपासक हैं वे तो अपने प्राण में सूक्ष्मरूप से चलनेवाले सब पृथिवी, अप्, तेज, आदि देवों के सन्देशों को सुनते है । शरीर को सब गतियों व चेष्टाओं के प्रेरक और नियामक वात! हे प्राण! शरीर में दोष उत्पन्न होती ही तुम तो हममें दिव्य प्रेरणाएँ करते ही, शरीर को विशेष प्रकार से हिलाने-डुलने व चेष्टा करने की प्रेरणा तथा विशेष प्रकार के भोजन-पान-आच्छादन की प्रेरणा पैदा करते हो। यदि हम उन्हें सुना करें, तुम द्वारा आये उन देवों के सन्देश को सुन लिया करें और इनके अनुसार आचरण कर लिया करें तो हमारे सब रोगों की चिकित्सा हो जाया करें या बहुत अवस्थाओं में तो हम रोग के उत्पन्न होने से ही बच जाया करें, पर हम उन्हें सुनते नहीं हैं। दूसरी ओर जो सुनने वाले हैं वे अपनी नासिकाओं में चलने वाले तुम्हारे 'स्वरों' को भी सुनते हैं ।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कत्ल और खून : यह कैसी आस्था?

मानवीय संवेदनाओं को किनारे कर इस्लाम और यहूदी मत से जुड़े लोग आज भी इसकी वकालत करते दीखते हैं। जबकि ये बर्बर थी और बर्बर ही है। ईश्वर के नाम पर किसी का खून बहाने के बजाय किसी को खून देना, कहीं ज्यादा पवित्र काम है। ईश्वर के नाम पर अपना रक्तदान करना न सिर्फ मानवीय है, बल्कि इससे आप किसी की जान बचा सकते हैं।

यूरोप में पशु वध के मुस्लिम और यहूदी तरीकों पर एक जनवरी से प्रतिबंध प्रतिबंध लागू कर दिया गया है। बेल्जियम के पशु अधिकार समूह के ग्लोबल एक्शन के निदेशक एन डी ग्रीफ ने जोर देकर कहा है कि आस्था के नाम पर पशु वध का मुस्लिम और यहूदी तरीका एकदम अमानवीय है। जीव अधिकारों से जुड़े कार्यकर्ता लंबे समय से इस कानून की मांग कर रहे थे, लेकिन यहूदी और इस्लामिक नेता इसे उदारवादी एजेंडे की आड में धार्मिक आस्थाओं पर हमला बता रहे हैं।

इस कानून के विरोध में बेल्जियम की सड़कों पर यहूदी और इस्लाम के मानने वाले प्रदर्शन कर अपना विरोध जता रहे है लेकिन वहां की सरकार अभी अपने इस फैसले पर अडिग दिखाई दे रही है। सरकार का कहना है कि लोग आस्था और धर्म के नाम पर मध्य युग में रहना चाहते हैं लेकिन बेल्जियम में कानून धर्म से ऊपर है और वह उसी तरह रहेगा।

मुझे नहीं पता इस कानून से उनकी धार्मिक आस्था की स्वतंत्रता कितनी प्रभावित हो रही है। लेकिन यह जरुर पता है कि आस्था, परम्परा और मजहब के नाम पर निरीह पशुओं दर्दनाक मौत जरुर दी जा रही हैं। इसके लिए स्वस्थ पशुओं का चुनाव किया जाता है इसके बाद मुस्लिम हलाल और यहूदी कोषेर नियमों के अनुसार जानवरों को तड़फा-तड़फाकर मारते हैं। जबकि उत्सव कोई भी हो उसका उद्देश्य होता है एक साथ खुशियां मनाना। लेकिन कुछ उत्सव ऐसे भी हैं जिनमें परम्पराओं के नाम पर पशुओं के साथ खुले आम बर्बरता दिखाई जाती है। मजहब, आस्था और अल्लाह के नाम पर सबसे बड़ी कुप्रथा का नाम है कुर्बानी जिसमें प्रतिवर्ष करोड़ों निरीह जानवरों के साथ क्रूरता की सारी हदें लांघ दी जाती है और अंधी आस्था में डूबे लोग इसे त्यौहार का नाम देते हैं।

ऐसे ही एक उत्सव नेपाल के देवपोखरी बड़ी ही धूम-धाम और संवोदनहीन होकर मनाया जाता है। यहां संवेदनाएं सिर्फ छोटे मासूम बच्चों की आंखों में दिखाई देती हैं, जो बेजुबान जानवर के साथ हो रही क्रूरता का मंजर हर साल अपनी आंखों से देखते हैं। हालाँकि नेपाल के दूसरे गढ़ीमाई मंदिर में दी जाने वाली लाखों पशुओं की बलि पर रोक लग गई है। जिसे संवेदना के स्वयं गढ़ीमाई मंदिर ट्रस्ट ने आगे बढ़कर इस क्रूर प्रथा पर रोक लगाई थी इस मंदिर में हर पांचवें साल में होने वाली पूजा में लाखों पशुओं की बलि दी जाती थी।

सालों पहले भारत में भी कुछ मंदिरों में पशु बलि प्रथा का रिवाज था जो अब कानून के माध्यम से रोक दिया गया है। अंधविश्वास में घिरे लोगों द्वारा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि का प्रयोग किया जाता था। लेकिन हिन्दू धर्म से जुड़ें कुछ विचारक और आर्य समाज जैसी संस्थाओं के घोर विरोध के कारण आज यह प्रथा ना मात्र को ही शेष बची है यदि कहीं बची भी है तो खुले तौर पर इसे नहीं मनाया जाता हैं।

भारत समेत पूरे विश्व में मानवीय संवेदनाओं को किनारे कर इस्लाम और यहूदी मत से जुड़े लोग आज भी इसकी वकालत करते दीखते हैं। जबकि ये बर्बर थी और बर्बर ही है। ईश्वर के नाम पर किसी का खून बहाने के बजाय किसी को खून देना, कहीं ज्यादा पवित्र काम है। ईश्वर के नाम पर अपना रक्तदान करना न सिर्फ मानवीय है, बल्कि इससे आप किसी की जान बचा सकते हैं।

किन्तु इसके उलट बकरीद पर बहुत से जानवरों को बहुतायत में मारा जाता है, और उन्हें खाया भी जाये यह जरूरी नहीं बहुत से ऊंटों की भी कुर्बानी दी जाती है और आप सोच सकते हैं कि आस्था के नाम पर यह व्यापार कितना बड़ा होता होगा। जानवरों के कल्याण के लिए काम करने वाले कार्यकर्ताओं का कहना है कि इस परंपरा के चलते जानवरों को कत्ल के समय असहनीय दर्द सहना पड़ता है जबकि धार्मिक नेताओं का कहना है कि परंपरागत तरीके में भी जानवरों को कोई दर्द नहीं होता।

मुस्लिम और यहूदी धर्म के धार्मिक नेता हमेशा इस तरह के तरीके को स्वीकार नहीं करते हैं और इसे ईश्वर का कानून समझते है। क्या कोई तार्किक व्यक्ति यह स्वीकार कर सकता है कि ईश्वर अपने बनाए जीवों की हत्या का आदेश देंगा? बेशक धर्म के नाम पर जानवरों की बलि देना एक प्राचीन परंपरा रही है, लेकिन निर्दयी रिवाजों को खत्म करने का काम तो अब तो सभी को मिलकर करना चाहिए। लोगों को स्वयं विचार करना चाहिए कि जो परंपराएं सदियों से चली आ रही हैं, पर ये किस समय और किस उद्देश्य से बनाई गई थीं, कम से कम इस पर बहस से तो शुरूआत की ही जा सकती है।

आज तार्किक बहस कर समाधान खोजना चाहिए। धर्म और पूजा में निस्वार्थ भाव, शांति और मानवता ही सिखाई जाती है। यदि उसके किसी क्रिया कलाप में दानवता है तो क्या वहां धर्म होगा? मानवता को जिंदा रखने का नाम धर्म है, फिर चाहे आप किसी भी मत या पंथ को क्यों न मानते हों। दया और स्नेह से बेहतरीन कोई कर्म नहीं होता, अगली बार जब किसी जानवर की हत्या कर किसी परम्परा या प्रथा को निभाने का मन हो तो चाकू पहले अपनी अंगुली पर चलाकर देखिये यदि दर्द का अहसास हो तो फिर उस निरीह पशु की आंखों में देखिये। वह आपको अलग-अलग तरह से अपनी आंखों आभार व्यक्त कर रहा होगा। कम से कम इतना मानवीय व्यवहार तो अपने अन्दर सीमित रखिए कि अब पशुओं को भी यूरोप की तरह अदालतों की ओर देखना न पड़ें।

- सम्पादक

इस्लाम छोड़ने की सजा

पिछले कई रोज से यह खबर अंतर्राष्ट्रीय सुर्खियाँ बटोर रही कि सऊदी अरब की एक युवती इस्लाम तथा अपने परिवार से दूर भागकर आस्ट्रेलिया जाने की कोशिश कर रही थी और बैंकॉक के मुख्य एयरपोर्ट में फंस गई है। अब 18 साल की रहफ मोहम्मद अल-कुनन कह रही है कि अगर वह दोबारा लौट कर अपने परिवार के पास गई तो इस्लाम त्यागने के कारण उनकी हत्या हो सकती है। हालाँकि इस्लाम त्याग कर भाग रही सऊदी लड़की को कनाडा ने उसे अपने देश में शरण दे दी हैं। दुनिया के अनेकों विचारक इस विषय पर अपनी गंभीर राय रख रहे है कि क्या इस्लाम से बाहर जाने का मौत के अलावा कोई दूसरा विकल्प क्यों नहीं है?

सऊदी अरब में इस्लाम त्यागने को एक जुर्म की तरह देखा जाता है, जिसकी सजा मौत होती है। यह कानून छठी-सातवीं शताब्दी से लागू है जिसका अभी भी पालन जारी है। माना जाता है कि यह व्यवस्था कुरान के अनुसार है जो सऊदी अरब की धार्मिक व्यवस्था का आधार भी है। यह व्यवस्था जन्म से लेकर मौत तक किसी भी इस्लाम के मानने वाले की जिंदगी के रास्ते तय करती है खासकर महिलाओं के मामले में तो इसका बेहद कड़ाई से पालन किया जाता है उनके साथ हर पल एक नाबालिग जैसे व्यवहार किया जाता है।

आज जिन लोगों को लगता होगा कि हर किसी को यह अधिकार हासिल है कि वो जिस धर्म-मजहब में पैदा हुए है उसको छोड़कर किसी दूसरे धर्म में आसानी से जा सकते है तो उनके लिए शायद इस्लाम बुरा सबक होगा। क्योंकि इस्लाम शुरू से है तो उसकी सजा मौत है जैसे अब 18 साल की सऊदी लड़की रहफ मोहम्मद अल-कुनन कह रही है कि यदि वह अपने घर वापिस गयी तो उसका परिवार उसकी हत्या कर देगा।

ऐसी ही इस्लाम के अन्दर एक

इस्लाम शुरू से ही वन वे स्ट्रीट की तरह है जिसमें इन्सान आ तो सकता है लेकिन आसानी से जा नहीं सकता। इस्लामिक मुल्कों के जानकर कहते हैं कि कोई भी इन्सान इस्लाम स्वीकार करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है, लेकिन उसे इस्लाम को छोड़ने की स्वतन्त्रता नहीं है। यदि कोई कोशिश करता है तो उसकी सजा मौत है ...

ही वन वे स्ट्रीट की तरह है जिसमें इन्सान आ तो सकता है लेकिन आसानी से जा नहीं सकता। इस्लामिक मुल्कों के जानकर कहते हैं कि कोई भी इन्सान इस्लाम स्वीकार करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है, लेकिन उसे इस्लाम को छोड़ने की स्वतन्त्रता नहीं है। यदि कोई कोशिश करता कहानी भी है कि एक बार कुछ लोगों के एक दल ने इस्लाम को त्याग दिया था। खलीफा अली ने उन्हें जला कर मार डाला। जब दूसरे खलीफा इब्न अब्बास ने इसके बारे में सुना तो वह बोला - अगर मैं होता तो मैंने उन्हें तलवार से मारा होता, क्योंकि मैंनें रसूल-अल्लाह को यह कहते सुना है कि इस्लाम का त्याग करने वाले को मार डालो, पर उसे जला कर मत मारो, क्योंकि पापियों को सजा देने के लिए आग अल्लाह का साधन है।

हालाँकि यह बात सभी जानते है कि अहिंसा, प्रेम, सद्भाव धर्म का मूल होता है, समस्त सृष्टि ईश्वर की बनाई हुई है। फर्क सिर्फ इतना हुआ कि बीते दो से तीन हजार सालों में बहुतेरे लोगों ने सोच, समझ और सनक से मत, पंथ और सम्प्रदाय बना डाले इस कारण आज ईश्वर को लोग अलग-अलग नामों से मानते हैं। इसमें सोचने की बात यह है कि अगर सृष्टि का रचयिता एक है तो उसका आदेश अलग-अलग कैसे हो सकता है? मानवता ही हम सबका का पहला धर्म है।

पर इस्लाम के संदर्भ में क्या ऐसा कहा जा सकता है? क्योंकि देश-विदेश से जो भी जानकारी आती है वह इस कथन को उल्टा कर देती हैं। साल 2015 में बीबीसी ने धार्मिक स्वतन्त्रता को लेकर ब्रिटेन के अन्दर एक पड़ताल की थी। इस पड़ताल के बाद बीबीसी से जुड़ी पत्रकार समीरा अहमद ने एक रिपोर्ट जारी करते लिखा था कि ब्रिटेन के अंदर इस्लाम छोड़ने या छोड़ने का इरादा रखने वाले मुसलमान नौजवानों को धमकियां मिल रही है, उन्हें डराया जा रहा है और उनका समुदाय से बहिष्कार किया जा रहा हैं। ब्रिटेन के कुछ शहरी मुसलमानों का मानना है कि इस्लाम को छोड़ना गुनाह है और इसकी सजा मौत भी हो सकती है।

उन्होंने लिखा था कि कई मामलों में तो उन्हें गंभीर शारीरिक यातनाओं का भी शिकार होना पड़ रहा है। स्थानीय काउंसिलें भी हैं जिन्हें इस मसले पर कम जानकारी है कि मुसीबत में फंसे इन नौजवानों को कैसे बचाया जाए। समीरा ने एक चौदह वर्ष की लड़की का उदाहरण देते लिखा था कि लंकाशायर की आयशा सिर्फ 14 साल की थीं जब उसने इस्लाम को लेकर सवाल करने शुरू कर दिए। वह कुरान का अध्ययन कर रही थीं। उसने हिजाब पहनने से मना कर दिया और आखिरकार फैसला लिया कि वह इस्लाम छोड़ रही हैं। उसके बाद तो घर में हालात बुरे हो गए। उसके पिता ने उसके गले पर चाकू रखकर मारने की धमकी दी और कहा कि अगर वह ऐसा करके परिवार को शर्मिंदा करती हैं तो वो उसे मार सकते हैं। इसके बाद उसकी बुरी तरह पिटाई की गयी। अंत में आयशा को पुलिस को बुलाना पड़ा।

इसी तरह कुछ समय पहले लेखक तुफैल अहमद ने भी लिखा था कि मौलिक स्वतंत्रता का हनन और बढ़ते कट्टरवाद के कारण मुसलमान इस्लाम को छोड़ रहे है। बीते 5 सालों से यह चलन बढ़ा है। यूरोप और अमेरिका में यह ट्रेंड सबसे अधिक देखा जा रहा है। इस्लाम धर्म को छोड़ने वाले मुसलमान स्वयं को एक्स-मुस्लिम अर्थात पूर्व मुसलमान कहते है। मुस्लिम धर्म को त्यागने वाले ज्यादातर नास्तिकता को अपना रहे है जबकि बड़ी संख्या में लोग हिन्दू और बौद्ध धर्म भी अपना रहे हैं। जैसे जैसे एक्स मुस्लिम का ट्रेंड बढ़ा है वैसे वैसे इनपर धमकियाँ और हमले भी बढ़े हैं।

आज मुद्दा यह नहीं है कि ये धमकियाँ और हमले क्यों बढे है बल्कि मुद्दा यह है कि सातवीं सदी के कानूनों से आज भी लोगों को उसी तरीकों से हांका जा रहा है और धार्मिक स्वतंत्रता देने की बजाय आधुनिकता का घोर विरोधी बनकर आज भी इस्लाम को छोड़ने की सजा रूप में मौत के फरमान सुनाये जा रहे हैं। शायद इसी कारण धार्मिक स्वतंत्रता तलाशते युवा इसे नकार रहे हैं। - ***राजीव चौधरी***

क्रान्तिकारियों की कथा

आजाद के अन्तिम दर्शन

गतांक से आगे -

इलाहाबाद के अंगरेज़ी दैनिक 'लीडर' ने जिसे क्रान्तिकारियों से सख़्त नफ़रत थी, प्रथम बार मुख-पृष्ठ पर सुर्खी दी-'ए ब्रेव रिवोल्यूशनरी गिव्स बैटिल टु द पुलिस।' (एक बहादुर क्रान्तिकारी ने पुलिस से डटकर मोर्चा लिया।)

ब्रिटिश सरकार ने आज़ाद की माउज़र पिस्तौल शम्भूनाथ को उपहार-स्वरूप नज़र की, और साथ ही डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट का ओहदा देकर 'राय बहादुर' का ख़िताब भी अता फ़रमाया। फिर उन्हें एम.बी.ई. (मेम्बर आफ़ ब्रिटिश एम्पायर) के आला ख़िताब से विभूषित किया। (स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस सरकार ने उन्हें तुरन्त पुलिस अधीक्षक बना दिया।)

15 हज़ार रुपए नक़द ईनाम के अलावा वीरभद्र तिवारी को सरकारी खर्चे पर एक अंग-रक्षक भी उसकी सुरक्षा के लिए दिया गया।

अन्य क्रान्तिकारियों के डर से नॉटबावर तुरन्त लंदन भाग गया और वहीं से अवकाश ग्रहण कर लिया। ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम ने 'सर' (नाइट) के उच्च सम्मान से उसे विभूषित किया। इस असाधारण कारगुज़ारी के एवज़ मे पेंशन की भारी रक़म भी उसके लिए मंजूर कर दी गई।

पुलिस कप्तान मैज़र्स ने खूब वाहवाही लूटी और कालान्तर में उन्हें यू.पी. पुलिस का इंस्पेक्टर जनरल बना दिया गया।

दूसरे दिन 28 फ़रवरी को अलीराज पुर रियासत की भावरा तहसील (तत्कालीन सेन्ट्रल प्रोविंसेज़ वर्तमान मध्य प्रदेश) में नियुक्त एक क्रान्तिकारी क्लर्क मनोहरलाल त्रिवेदी ने जब हाथ में अख़बार लिए आज़ाद की पूज्या मां श्रीमती जगरानी देवी को उनकी बांस की बनी कोठरी में जाकर यह दु:खद समाचार सुनाया, तो वे इतनी रोई, इतनी रोई, अपने एक-मात्र पुत्र के वियोग में कि आंसुओं की जगह उनकी एक आंख से खून बहने लगा। वे एक आंख से अंधी हो गई। उनका कोई पुरसांहाल न रहा। 27 वर्षों तक कोदों खाकर वे अपने पेट का गड्ढा भरती रहीं।

शहीदे-आजम चन्दशेखर आज़ाद हमारे देश के उस दौर के रहनुमा थे, जिसमें हमारे बड़े नेताओं ने देश को गुमराह कर रखा था। उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने के लिए आज भी उनकी देशभक्ति, लगन, त्याग और तपस्या की तड़प याद आती है। उनका बलिदान हमें सदा प्रेरणा देता रहेगा। उन्हें मेरे कोटिश: नमन्।

- ***क्रमश:***

- ***धर्मेन्द्र गौड़ : साभार : क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने***

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

154वें जन्मदिवस (28 जनवरी) पर विशेष

भारतीय स्वाधीनता संग्राम अमर सिपाही : लाला लाजपत राय

आजादी के मर्म को जनांदोलन बनाने वाले, महान् राष्ट्रवादी, समाज सुधारक, लेखक और सम्पादक अजेय क्रांतिकारी लाला लाजपत राय भारत के उन महान् देश सपूतों में से थे जिन्होंने अंतिम श्वास तक अंग्रेजी हुकूमत को निर्भीकता से ललकारते रहे। जिन्होंने अंग्रेजी शासन की गोलियों और तोपों के सामने निडरता के साथ जान हथेली पर रखकर भारत की गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए अपने तन का कतरा-कतरा कुर्बान कर दिया। साइमन कमीशन के भारत आने के विरोध में लाला जी ने भारतीय इंकलाब को एक नई दिशा देने के लिए लोगों को जागृत करने का अखंड प्रयास किया। इसी प्रयास में अंग्रेजी पुलिस की लाठियां उन्हें खानी पड़ी, लेकिन उन्होंने कदम को पीछे नहीं हटाया। लाठियां खाते हुए लाला जी ने कहा था, 'मुझ पर जो लाठियां बरसाई गई हैं, वे भारत में बर्तानवी हुकूमत के ताबूत में आखिरी कील साबित होगी'। उनके ये शब्द सच साबित हुए। अंग्रेजी शासन की लालाजी पर पड़ी लाठियां भारत में एक नई फिरंगी विरोधी लहर पैदा करने का कारण बनीं। ऐसे अजेय साहसी योद्धा का शहीद होना निरर्थक नहीं गया। सारे देश में साइमन कमीशन के विरोध और अंग्रेजी हुकूमत को उखाड़ फेकने का नया संग्राम ही छिड़ गया। लाला लाजपत राय का जन्म पंजाब के फिरोजपुर जिले के गांव ढुडीके में एक साधारण परिवार में 28 जनवरी 1865 को हुआ। उनका गांव ढुडीके 1905-07 में किसान लहर में सरगर्म और सबसे लोकप्रिय रहा था। यह वही गांव है, जो 1914-15 की गदर पार्टी लहर का दूसरे चरण का प्रमुख केंद्र रहा। पंजाब के क्रांतिकारी इसी गांव से अपनी गतिविधियों को संचालित कर रहे थे। इसी गांव में पाला सिंह ढुडीके और ईश्वर सिंह ढुडीके ने भारत की आजादी के संग्राम की ज्वाला धधकाई थी। लालाजी पर इसका बहुत गहरे तक असर हुआ। वह आजादी के लिए संकल्पित हो गए। बचपन से ही शिक्षा, समाज और संस्कृति के प्रति रुचि होने के कारण सामाजिक और शैक्षिक विषयों में रुचि लेने लगे थे। हाई स्कूल की शिक्षा हासिल करने के बाद लाजपत राय 1881 में गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर में दाखिला लिया। लाहौर में उस वक्त दो सुधारवदी जनांदोलनों का केंद्र था। ब्रह्म समाज और दूसरा आर्य समाज का जनांदोलन। ये दोनों जनांदोलनों का उद्देश्य राष्ट्रवादी और समाज सुधार का था। लाहौर में लालाजी पहले ब्रह्म समाज के सदस्य बनें लेकिन ब्रह्म समाज में गुटबाजी देखकर उनका वहां से मोह भंग हो गया। वे समाज में एक सुधारवादी क्रांति के लिए उत्सुक थे। उनके साथी पं. गुरुदत्त उस वक्त के एक प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता थे। गुरुदत्त और साईंदास की प्रेरणा से लाला जी ने आर्य समाज में प्रवेश किया। इसके बाद उन्होंने 1888 में तत्कालीन कांग्रेस के सदस्य बनें और भारतीय स्वाधीनता के समर में खुद को झोंक दिया। 1892 में वह हिसार छोड़कर हमेशा के लिए लाहौर आकर बस गए। यहां उन्होंने वकालत के साथ ही साथ स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों और वकालत करना शुरू किया। लाहौर आकर लालाजी ने कई तरह की गतिविधियां चलाने लगे। उन्होंने जहां आर्थिक संबल बढ़ाने के लिए 'पंजाब नेशनल बैंक' की स्थापना की वहीं पर 'दयानंद एंग्लोवैदिक कॉलेज समाचार पत्र' निकालना शुरू किया। जनता को अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जागरूक करने और समाज सुधार के नजरिए से 'भारत सुधार' और 'आर्य मैसेंजर' में लेख लिखना प्रारम्भ किये। सामाजिक क्षेत्र में में लालाजी ने अनेक सुधारवादी कार्य किये। 1897 में भारत के मध्य प्रांतों में भयानक अकाल पड़ा। जनता त्राहि-त्राहि करने लगी। अंग्रेजी शासन ने जनता की इस त्रासदी के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई। ऐसे में लालाजी भला कैसे चुप बैठने वाले थे। उन्होंने बिना बिलम्ब किये 'हिंदू यतीम सहायक संस्था' की स्थापना की। मध्य प्रांतों से अकाल से पीड़ित बच्चों के लिए लाहौर और फिरोजपुर में अनेक अनाथालयों की स्थापना की। आज भी डीएवी प्रबंध कमेटी के जरिए ये अनाथालय चलाए जा रहे हैं। इस तरह लाजपत राय ने जहां एक तरफ लेखनी के जरिए जनता में क्रांतिकारी और समाज सुधार की आगे धधकाते रहें वहीं दूसरी तरफ एंग्लो वैदिक कॉलेज के जरिए गुरुदत्त के साथ मिलकर लड़कों और लड़कियों को बेहतर तालीम दिलाने के लिए कार्य करते रहे। एंग्लो वैदिक कॉलेज के निर्माण की मंशा में उनके विचारों को हम बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। उन्होंने कहा संस्कृत और हिंदी की शिक्षा को अंग्रेजी शिक्षा के साथ देना इस लिए लाजिमी है, क्योंकि इससे संस्कृत और हिंदी के संस्कार बच्चों में गहराई से बैठ जाएंगे, जो उनके राष्ट्रवादी चेतना को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने बच्चों की शिक्षा पर सबसे अधिक ध्यान दिया। उनका मानना था कि यदि बच्चे शिक्षित और संस्कारित हो गए तो समाज में छाए अंधविश्वास, पाखंड और बुराइयों को खत्म करने में मदद मिलेगी। इसी परिपेक्ष्य में बच्चों की शिक्षा के लिए 'हिंदू प्राथमिक शिक्षा लीग कायम की। वह कट्टरता के सख्त खिलाफ थे। हिंदी मासिक 'हिंदू मार्डन रिव्यू' के जुलाई अंक में उन्होंने जाति प्रणाली की कट्टरता के विरोध में लिखा-हिंदू जाति प्रणाली में कट्टरता हिंदू समाज में जहर है..... यह हमारी इंसानियत, हमारी न्याय भावना और हमारी सामाजिक एकता के लिए अपमान की बात है। .....हम लोग लोकराज युग में जी रहे हैं। लोकराज इस बात की मांग करता है कि सभी असमानताओं को खत्म कर दिया जाए।'' लालाजी उच्चकोटि के शिक्षा शास्त्री थे। वह मानते थे कि शिक्षा ही देश की आबादी में महत्वपूर्ण रोल अदा कर सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने 'तिलक स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स' 'नैशनल कॉलेज' और द्वारका दास लाइब्रेरी' जैसी तमाम संस्थाओं की संस्थापना की। भारत के बाहर लालाजी ने विदेश में बसे भारतीयों को जागरूक करने और विदेशी शासन को अपनी गतिविधियों से अवगत कराने के लिए अमेरिका में 1914 में 'इडियन होम रूल लीग' की स्थापना की। इसके साथ ही उन्होंने असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया और गिरफ्तारी दी। उनकी गिरफ्तारी से भारत के उन सपूतों को प्रेरणा मिली जो देशहित में क्रांतिकारी बन गए थे। 1926 में उन्होंने देश में एक अलग जागृति लाने के लिए 'नैशनलिस्ट पार्टी' की स्थापना की। साथ ही उनका इंकलाबी सफर भी आगे बढ़ता रहा। 'भारत माता सोसाइटी' के साथ उनका बहुत नजदीकी रिश्ता था। उनके साथ सरदार भगतसिंह के पिता सरदार किशन सिंह, अजीत सिंह (भगत सिंह के चाचा) सूफी अंबा प्रसाद, और आनंद किशोर जैसे महान् देशभक्त, उस समय लैंड रिव्यू बढ़ा देने के खिलाफ दोआबा बारी एक्ट और कलोनाइजेशन एक्ट के खिलाफ लोगों को जागरूक करने में लगे हुए थे। इसका असर यह हुआ कि सारा पंजाब उनके साथ हो गया । इससे अंग्रेजी हुकूमत लालाजी के खिलाफ हाथ धोकर पड़ गयी। लेकिन लालाजी भला कब मानने वाले थे। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा जनता का शोषण, जुल्म और क्रूरता के खिलाफ अपना आंदोलन जारी रखा। लाजपत राय ने शिक्षा, स्वधर्म, स्वसंस्कृति, स्वराज और स्वभाषा को भारतीय समाज के लिए जिन आधारों को लेकर प्रेरणा दी, वे आधार आज भी भारतीयता के आधार बनें हुए हैं। समाज में सबको बेहतर शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य, बेहतर आय के साधन और श्रम के मूल्य, स्वधर्म की प्रासंगिकता और स्वसंस्कृति की चेतना के महत्व को लालाजी ने अपने जीवन में ही नहीं रेखांकित किया बल्कि समाज के लिए इसकी महत्ता को बेहतर ढंग से प्रतिपादित किया। 30 अक्टूबर 1928 को साइमन कमिशन के भारत आने के विरोध में लाहौर के मोरी गेट के मैदान में जन सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जो कील ठोकी वह वाकई में अंग्रेजी शासन के ताबूत में अंतिम कील साबित हुई। लाला जी के शब्द आज भी इंकलाबी आंदोलन को नई ऊर्जा देने वाले हैं। भले ही अंग्रेजों की लाठियों से उनके सिर में गहरी चोट आई हो, लेकिन इस चोट ने भारत में एक नया इतिहास का सृजन कर दिया।

- साभार : आर्ष क्रान्ति

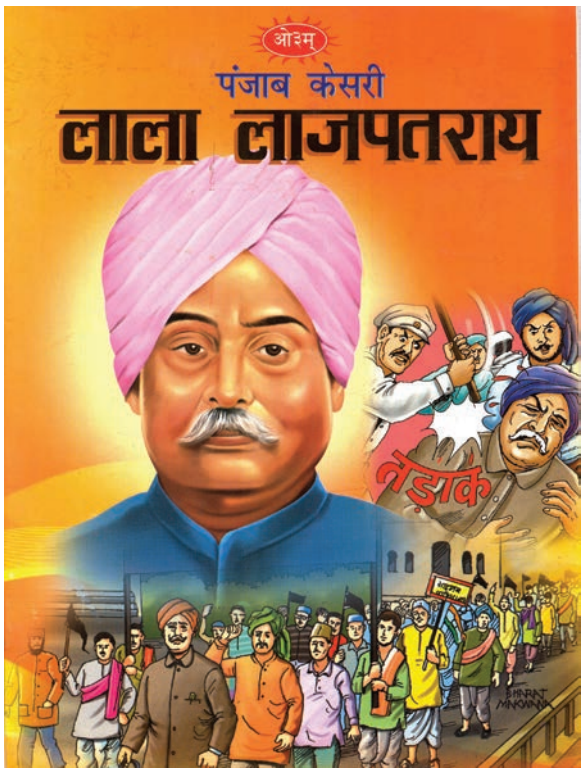

...1897 में भारत के मध्य प्रांतों में भयानक अकाल पड़ा। जनता त्राहि-त्राहि करने लगी। अंग्रेजी शासन ने जनता की इस त्रासदी के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई। ऐसे में लालाजी भला कैसे चुप बैठने वाले थे। उन्होंने बिना बिलम्ब किये 'हिंदू यतीम सहायक संस्था' की स्थापना की। मध्य प्रांतों से अकाल से पीड़ित बच्चों के लिए लाहौर और फिरोजपुर में अनेक अनाथालयों की स्थापना की।...

श्री अर्जुनदेव चड्डा जी का 75वां जन्मदिवस-अमृत महोत्सव सम्पन

श्री अर्जुन देव चड्डा जी का 75वां जन्मदिवस समारोह अमृत महोत्सव के रूप में 14 जनवरी, 2019 को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूरे कोटा शहर के जाने-माने गणमान्य अतिथियों ने उनका सम्मान किया व शुभकामनाएं दी। श्री अर्जुन देव चड्डा जी एक चलती फिरती आर्य समाज हैं। सम्पूर्ण कोटा शहर की ऐसी को गतिविधि नहीं जिसमें उनका सहयोग न होता हो।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, उप प्रधान ओम प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा, सचिव श्री सुरिन्द्र चौधरी, आर्य वीरांगना दल दिल्ली की ओर से श्रीमती विभा आर्या, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार, डी.ए.वी. के सचिव श्री सतपाल आर्य एवं आर्यनेता श्री देवेन्द्र पाल वर्मा सहित कई अनेक महानुभावों ने पहुंचकर अपनी शुभकामनाएं भेंट की।

अपने 'सहयोग' को बनाएं किसी की मुस्कान

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की।

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की

आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

मकर संक्रांति पर यज्ञ सम्पन्न

मकर संक्रांति महापर्व के अवसर पर आर्य समाज शकरपुर के यशस्वी मंत्री श्री पतराम त्यागी जी के नेतृत्व में शकरपुर में दिनांक 14 जनवरी को यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ पं. ब्रजपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ यज्ञमान के रूप में स्थानीय निगम पार्षद श्रीमती नीतू त्रिपाठी उपस्थित थे। कार्यक्रम निगम पार्षद के कार्यालय के पार्क में संपन्न हुआ।

श्री पतराम त्यागी ने भी उपस्थित जनसमूह को मकर संक्रांति के वैदिक स्वरूप का विस्तार से वर्णन किया। यज्ञ के पश्चात प्रसाद वितरण श्रीमती नीतू त्रिपाठी निगम पार्षद द्वारा किया गया। इस यज्ञ में आरडब्ल्यूए के पदाधिकारी डब्ल्यूए ब्लाक के प्रधान श्री आर.के. शर्मा, चेयरमैन श्री रंजीत सिंह, कार्यालय सचिव एस. एल. मिश्रा, कार्यकारिणी सदस्य अनिल अग्रवाल, रविदत्त त्यागी आरडब्ल्यूए प्रधान स्कूल ब्लाक पार्ट-2, उपाध्याय ब्लॉक के महासचिव एवं मीडिया संयोजक विधिक एवं मानवाधिकार विभाग दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी अशोक शर्मा, अजय शर्मा , वेदप्रकाश वानप्रस्थी, राकेश शर्मा, अनुज त्यागी, दीपक त्यागी, नंद कुमार वर्मा, श्री कृष्ण मंदिर के वरिष्ठ उपप्रधान रामेश्वर त्यागी तथा अन्य गणमान्य क्षेत्र के प्रबुद्ध लोग यज्ञ में शामिल होकर आहुति दी। - ***मन्त्री***

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

पुस्तकें

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,

नई दिल्ली-110001

मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2019 का

कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

आर्य समाज से सोशल मीडिया पर जुड़ें

YouTube Channel @thearyasamaj Subscribe सब्सक्राईब करें

Facebook Page @thearyasamaj Like लाइक करें

Twitter Handle @thearyasamaj Follow फॉलो करें

Whatsapp Channel 9540045898 इस नम्बर को अपने मोबाइल में SAVE करें और अपना नाम व स्थान लिखकर भेजें

MDH हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो 5,10,20 किलो की पैकिंग

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

Veda Prarthana - II
Regveda - 25/1

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न
यन्मित्रैः सममममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं
पक्वः पुनराविशाति।।

– अथर्व. 12/3/48

Na kilibashamatra nadharo asti na yanmitraih samamamana eti.
Anoonam patram nihitam na etat paktaram pakvah punaravishati.
(Atharva Veda 12:3:48)

This Veda mantra describes three important things about our karmas. First, one must bear the good or bad fruits/results/consequences of all karmas depending upon the type of deeds one previously performed. Their exact tally does not become less or forgotten. Second, under no circumstances the bad results of one's previously performed karmas are forgiven because one tries to plead to God to do so. Third, our relatives, friends, or others do not share the results of our karmas. The basic Vedic principle about karma is 'as one sows so shall one reap' no more and no less.

One can often observe that many human beings due to greed, fulfillment QJ

One Must Bear the Fruits (Good or Bad) of One's Karmas

- Acharya Gyaneshwarya

transient pleasures, under the influence or pressure of others 'do wrong, bad, or sinful deeds even though they are aware that the eventual results or consequences of the deeds performed will be bad. On other occasions people knowingly lie, deceive, commit fraud, or steal from others, to prevent financial loss, loss of their job, fear of punishment in immediate future by their boss or higher ups etc. After doing the bad deeds most people in their minds have fear, and many others feel ashamed and/or have doubts about their own-self because of their dishonesty and lack of integrity. When we do a bad or sinful deed, God as the inner voice to our souls and minds produces doubt, shame and fear in everybody, however, how much we want to hear or ignore it, the choice is ours. People, who still have some conscience left, usually experience remorse over having done the bad deed because they are aware in the future they would receive punishment as a fruit of their ill deeds. To avoid the future punishment the various persons try to find different penitent methods e.g. donate some money, perform havan (fire ceremony), use rosary beads to pray, do japa i.e. repeatedly chant God or god's name, bathe in holy rivers, do fasting, have special worship rituals performed by a priest on their behalf, or go on pilgrimages to 'holy' places. Moreover, so many priests, so called 'gurus' or 'holy men' and religious leaders exploit the gullible penitent persons, 'to save them from punishment' by advising special charity rituals and donation of money to or through them, various offering to gods and their icons, and/or performing other rituals described in the previous sentence.

Vedic scholars have described that karmas/deeds can be performed at three different levels. The first is a physical action performed by our body, second is verbal action expressed as our words, and third is mental action in the form of our thoughts and our intent to perform physical or verbal actions. At the three levels described above, a person can perform 10 types of good as well as 10 types bad deeds. At the physical level, there are three types of good deeds: protecting others deserving our protection, donating to help others, and serving others needing our help. At the word or voice level, there are four types of good deeds: speaking truthlbeing honest, speaking sweet words in a sweet manner, speaking words that are helpful and for others benefit, speaking spiritually uplifting words of scriptures. At the mental level, there are three typs of good deeds: nurturing thoughts of kindness and having kind thoughts for others, avoid all thoughts of greed and avarice, and most importantly having a deep abiding faith in God and the thoughts to nurture and promote that further. At the physical level, there are three types of bad deeds: hurting others and being violent, stealing and theft from others, and being unchaste or performing immoral actions. At the word or voice level there are four types of bad deeds: lying or being dishonest, speak harshly or use angry words, use hurtful words or words that would be harmful to others, and talk nonsense or worthlessly. At the mental level there are three types of bad deeds: thoughts of hurting others and opposing others goodness, thoughts of greed and avarice and mental schemes of somehow fulfilling them, and a lack of faith in God and the thoughts of opposing faith in God, soul, dharma, karmas and their future good and bad results, and rein carnation.

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यासः (75)
महत्त्वपूर्ण शब्दार्थः

गतांक से आगे....

अकस्मात् ---- अचानक
अन्येद्युः ------- दूसरे दिन
परेद्युः --------- अगले दिन
अजस्रम् ----- लगातार
अस त् ----- अनेक बार
इतस्ततः ----- इधर-उधर
इदानीम् ------ इस समय
तदानीम् ----- उस समय
इव/वत् ----- तरह/समान
ईषत् --------- थोड़ा
एकत्र -------- इकट्ठा
कदाचित् ----- किसी समय
क्वचित् ----- कहीं
क्व-क्व ------ कहाँ-कहाँ
चिरम् ------- बहुत समय तक
चेत् ---------- यदि

यत् ---------- कि
त्रिधा ------- तीन प्रकार
बहुधा ------- अनेक बार
वृथा --------- बेकार
तूष्णीम् ------ शांत/चुप
नूनम् --------- निश्चय
निकषा ------- निकट
पुरतः --------- सामने
प्रत्युत -------- बल्कि
पुरा/प्राक् ----- पहले
मृषा ------------ झूठ
मिथः ---------- परस्पर
मुहुर्मुहुः -------- बारम्बार
वरम् ----------- श्रेष्ठ
नमः ----------- नमस्कार

– क्रमशः

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय, मो. 9899875130

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने विभिन्न प्रकाशकीय कार्यों के लिए एक सुयोग्य सम्पादक की अवश्यकता है, जो सभा के मुख पत्र आर्य सन्देश तथा प्रकाशित होने वाले साहित्य के टाइपिंग, प्रूफरीडिंग, सैटिंग का कार्य निपुणता के साथ कर सके। आर्यसमाज एवं वैदिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक अभ्यर्थी अपना बायोडाटो **aryasabha@yahoo.com** पर भेजें।

– महामन्त्री

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

प्रेरक प्रसंग

मनघड़न्त गायत्री

पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज अपने व्याख्यानों में अविद्या की चर्चा करते हुए निम्न घटना सुनाया करते थे। रोहतक जिला के रोहणा ग्राम में एक बड़े कर्मठ आर्यपुरुष हुए हैं। उनका नाम था मास्टर अमरसिंहजी। वे कुछ समय पटवारी भी रहे। किसी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज को बताया कि मास्टरजी को एक ऐसा गायत्री मन्त्र आता है जो वेद के विख्यात गायत्री मन्त्र से न्यारा है। स्वामीजी महाराज गवेषक थे ही। हरियाणा की प्रचार यात्रा करते हुए जा मिले मास्टर अमरसिंह जी से।

मास्टरजी से निराला 'गायत्रीमन्त्र' पूछा तो मास्टरजी ने बताया कि उनकी माताजी भूतों से बड़ा डरती थी। माता का संस्कार बच्चे पर भी पड़ा। बालक को भूतों का भय बड़ा तंग करता था। इस भयरूपी दुःख से मुक्त होने के लिए बालक अमरसिंह सबसे पूछता रहता था कि कोई उपाय उसे बताया जाए। किसी ने उसे कहा कि इस दुःख से बचने का एकमात्र उपाय गायत्रीमन्त्र है। पण्डितों को यह मन्त्र आता है।

मास्टरजी तब खरखोदा मिडिल स्कूल में पढ़ते थे। वहाँ एक ब्राह्मण अध्यापक था। बालक ने अपनी व्यथा की कथा अपने अध्यापक को सुनाकर उनसे गायत्री मन्त्र बताने की विनय की। ब्राह्मण अध्यापक ने कहा कि तुम जाट हो, इसलिए तुम्हें गायत्री मन्त्र नहीं सिखाया जा सकता। बहुत आग्रह किया तो अध्यापक ने कहा कि छह मास हमारे घर में हमारी सेवा करो फिर गायत्री सिखा दूँगा।

बालक ने प्रसन्नतापूर्वक यह शर्त मान ली। छह मास जी भरकर पण्डितजी की सेवा की। जब छह मास बीत गये तो अमरसिंह ने गायत्री सिखाने के लिए पण्डितजी से प्रार्थना की। पण्डितजी का कठोर हृदय अभी भी न पिघला। कुछ समय पश्चात् फिर अनुनय विनय की। पण्डितजी की धर्मपत्नी ने भी बालक का पक्ष लिया तो पण्डितजी ने कहा अच्छा पाँच रुपये दक्षिणा दो फिर सिखाएँगे।

– शेष अगले अंक में

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रवेश सूचना

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब) - 141002 में शिक्षा सत्र 2019-20 के लिए छठी कक्षा में (आयु +9 से 11 वर्ष) की कन्याओं के लिए प्रवेश आरम्भ हैं। प्रवेश हेतु इच्छुक महानुभाव नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/-) भरकर 31 मार्च, 2019 तक गुरुकुल कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं अथवा डाक द्वारा भी मंगा सकते हैं।

प्रवेश के लिए लिखित परीक्षा 7 अप्रैल, 2019 (रविवार) को प्रात: 8 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

- ***मोहनलाल कालड़ा, प्रबन्धक, 09814629410, 0161-2459563***

पुरोहितों/धर्माचार्यों की आवश्यकता

ऐसे महानुभाव जो गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षा प्राप्त हैं तथा दिल्ली की आर्यसमाजों में पुरोहित/ धर्माचार्य के रूप में अपनी सेवाएं देना चाहते हैं। वे कृपया आवेदन पत्र नाम, पते, मोबाईल नं., ईमेल, योग्यता आदि लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें -

अध्यक्ष/संयोजक, वैदिक प्रचार समिति

द्वारा/दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत

देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं -

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम - **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।

- ***संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति***

शोक समाचार

श्री सुरेन्द्र पाहवा जी का निधन

आर्यसमाज मौसम विहार, दिल्ली के प्रधान श्री सुरेन्द्र पाहवा जी का 11 जनवरी को रात्रि 8 जे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 12 जनवरी को निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव एवम् बोधोत्सव

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के तत्वाधान में नगर सामुदायिक भवन मोती नगर में दिनांक 3 मार्च रविवार को स्वामी दयानंद सरस्वती जी का जन्मोत्सव एवम् बोधोत्सव 10 बजे से 2:00 बजे तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर स्कूल/कालेज के विद्यार्थियों द्वारा भाषण प्रतियोगिता होगी। जिसका विषय - 'विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश होना चाहिए' तथा 'सब से यथायोग्य धर्मानुसार वर्तना चाहिए' होगा। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए श्री वीरेन्द्र सरदाना (9911140756) से सम्पर्क करें। प्रतियोगिता में प्रथम/द्वितीय/तृतीय स्थान पाने पर उचित सम्मान राशि भी दी जाएगी। - ***महामन्त्री***

आर्यसमाज सूरजमल विहार का

28वां वार्षिकोत्सव समारोह

आर्यसमाज सूरजमल विहार, दिल्ली का 28वां वार्षिकोत्सव समारोह 27 जनवरी, 2019 को प्रात: 9 बजे से आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर गायत्री यज्ञ श्री उदयभानु जी शास्त्री के ब्रह्मत्व आयोजित होगा। भजन श्री दिनेश पथिक जी एवं प्रवचन आचार्य आशीष जी के होंगे।

- ***सुभाष ढींगरा, मन्त्री***

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स का

89वां स्थापना दिवस

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली के 89वां स्थापना दिवस के अवसर पर भजन-प्रवचन का आयोजन 25 जनवरी, 2019 सायं 5:30 बजे से किया जा रहा है। यज्ञ आचार्य कुवंरपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में होगा। भजन श्री गौरव आर्य जी तथा प्रवचन डॉ. छविकृष्ण शास्त्री जी के होंगे। कृपया कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य ग्रहण करें।

- ***संजीव बजाज, प्रधान***

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019 एवं 2020

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थित एवं मूलभूत आवश्यकताओ के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail. com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। - ***व्यवस्थापक***

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे :-		15. श्री भारतभूषण मुखी	20000
11.इंटरनेशनल दयानन्द वेद पीठ	11000	16. आर्यसमाज सुन्दर विहार	11000
12. श्री मनीष आर्य	500	17. डॉ. मुकेश कुमार आर्य	500
13. श्रीमती उषा सिड़ाना	500	18. श्री जयदेव गुप्ता	2000
14. गुप्तदान	800		- **क्रमश:**

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें। आप अपना सहयोग सीधे बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं -

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'

खाता सं. 0133002100005251 पंजाब नेशनल बैंक,

IFSC - PUNB0013300 MICR - 110024092

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करें या aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। - *महामन्त्री*

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17-18 जनवरी, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 जनवरी, 2019

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के अन्तर्गत

वार्षिक नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन

बुधवार 23 जनवरी, 2019 प्रात: 9:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली से सम्बद्ध/असम्बद्ध दिल्ली स्थित आर्य विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू किया गया है, के सभी विद्यार्थियों (कक्षा-1 से 12 तक) की नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन 23 जनवरी, 2019 को प्रात: 9:30 बजे सभी विद्यालयों में किया जाएगा। अत: जिन विद्यालयों ने अभी तक अपने विद्यालयों के बच्चों की संख्या सूची न भेजी हो, उनसे निवेदन है कि अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या कक्षावार सूची बनाकर यथाशीघ्र भेजे दें जिससे संख्यानुसार विद्यालयों को प्रश्नपत्र भेजे जा सकें। सभी विद्यालयों की परीक्षा एक ही दिन एक ही समय सम्पन्न होगी।

- सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता (9810855695)

प्रतिष्ठा में,

एक करोड़ तीस लाख
से अधिक लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और
अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।
यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना
चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

देश और समाज विभाजन के
षड़यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

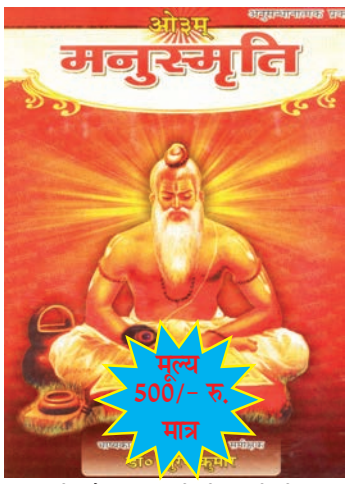

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600~~/- 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह
Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु.
हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह